दिल्ली-हिसार शराबबंदी यात्रा

हरियाणा में चल रहे शराबबंदी आन्दोलन को और अधिक तेज करने की आवश्यकता महसूस की गई क्योंकि घाघरी व जूतों की माला पर अदालत ने रोक लगा कर संकेत दे दिया था कि शराब माफिया और भजन लाल सरकार के प्रभाव में अदालतें भी आ चुकी हैं। अतः भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने जुलाई 1993 में फैसला लिया कि दिल्ली से लेकर हिसार तक की शराबबंदी पद-यात्रा निकाल कर शराब माफिया और भजन लाल से सीधी टक्कर ली जाये। हिसार में भजनलाल के दामाद की डिस्टिलरी थी। इस कार्यक्रम के अनुसार 23 सितम्बर को दिल्ली से रवाना होकर 2 अक्टूबर को हिसार पहुँचना था। यह यात्रा आर्यसमाज, अनारकली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से शुरू होनी थी और उससे पूर्व भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा हरियाणा शराबबंदी संघर्ष समिति के एक शिष्टमण्डल ने महामहिम राष्ट्रपति को एक ज्ञापन देकर पूरे देश में शराबबंदी करने की मांग करनी थी। यात्रा ने 23 सितम्बर को करोलबाग, देवनगर, आनन्द पर्वत, पंजाबी बाग होते हुए रात्रि पड़ाव नांगलोई करना था। 24 सितम्बर को मुण्डका, टीकरी होते हुए रात्रि पड़ाव बहादुरगढ़ करना था। 25 सितम्बर को सांखोल, जाखोदा, रोहद होते हुए रात्रि पड़ाव सांपला करना था। 26 सितम्बर को इस्माइला, कहलावड़, खेडी साध होते हुए रात्रि पड़ाव अस्थल बोहर करना था। 27 सितम्बर को छोटूराम पार्क रोहतक, छोटी बहू होते हुए रात्रि पड़ाव बहु अकबरपुर करना था। 28 सितम्बर को मदीना, खरकड़ा, बहलवा होते हुए रात्रि पड़ाव महम करना था। 29 सितम्बर को भैणी महाराजपुर, सिंधवा, मदन हेड़ी होते हुए रात्रि पड़ाव मुण्ढाल करना था। 30 सितम्बर को सोरखी होते हुए रात्रि पड़ाव हाँसी करना था। 1 अक्टूबर को माइयड में रात्रि पड़ाव और बड़ा सम्मेलन करना था। 2 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे सातरोड खुर्द बाई पास पहुँच कर डिस्टिलरी का घेराव करना था।

दिल्ली-हिसार की यह पद-यात्रा भजन लाल की सरकार से सीधी टक्कर थी अतः इसकी तैयारी जोरदार ढंग से की गई। स्वामी अग्निवेश जी ने महाराष्ट्र की किसान नेता बहन विमलताई से मिलकर अपने कार्यकर्त्ता भी इस पद-यात्रा में भेजने का आग्रह किया ताकि इस पद-यात्रा को राष्ट्रीय स्वरूप मिल सके। राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश और बिहार तक के साथियों से भी अपील की गई कि इस पद-यात्रा में शामिल होकर इसे सफल बनायें। हरियाणा के सत्याग्रहियों ने बीच-बीच में इस काफिले में शामिल होना था। विमलताई रेजापुर ने महाराष्ट्र से लगभग पाँच हजार कार्यकर्त्ता भेजने का प्रबन्ध किया जिसे संभालना एक समस्या बन गई अतः उनके आवास तथा भोजन की व्यवस्था गुरुद्वारा बंगला साहिब में कराई गई।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 23 सितम्बर 1992 को स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, स्वामी आदित्यवेश, सोमपाल शास्त्री, रघुयादव, कपिलदेव शास्त्री, प्रो. श्योताजसिंह, जगवीर सिंह, बीरमती आदि ने शिष्ट मण्डल के रूप में महामहिम राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा जी को अपना ज्ञापन देकर रोहतक-हिसार यात्रा के सफल होने का आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ प्राप्त कीं। पहला रात्रि पड़ाव नांगलाई था अतः जब मैंने यात्रा के साथ असंख्य लोगों का हजूम देखा तो देख कर दंग रह गया। नांगलाई गाँव में उनके भोजन का प्रबन्ध था अतः आयोजक भी इतनी भीड़ देख कर दांतों तले अंगुली दबा गये। लेकिन सवाल गाँव की इज्जत का था अतः इस आपात स्थिति से निपटने के तत्काल प्रबन्ध किये गये। पाँच हजार को ठहराने का कोई पुख्ता इंतजाम इस छोटे से कस्बे में घर-चौपाल में नहीं हो सकता था अतः उन्हें सूरजमल स्टेडियम में रात्रि विश्राम के लिए कहा गया। भोजन व्यवस्था भी चरमरा गई क्योंकि संख्या लगभग सात हजार हो गई थी। अगले दिन चाय-नाश्ता करके यात्रा आगे बढ़ी और मुण्डका गांव पहुँची जो दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री स्व0 चौ0 साहिब सिंह वर्मा का गाँव है। दोपहर के भोजन की व्यवस्था यहीं के स्थानीय स्कूल में थी लेकिन भारी भीड़ देखकर यहाँ भी आयोजकों के पसीने छूट गये। इसका कारण यह था कि प्रबन्धकों को यह विश्वास ही नहीं था कि पांच हजार लोग यात्रा में आयेंगे ही अतः उन्होंने प्रबन्ध कम लोगों का किया था।

किन्तु संख्या छ-सात हजार हो गई थी। जैसे तैसे निपटाया और आयोजकों ने इस स्थिति से निपटने के लिए तुरंत चावल उबलवाये और यात्रा को आगे बढ़ाया गया। रास्ते में दानदाताओं ने फलों के टोकरे के टोकरे भेंट किये थे जो रास्ते में यात्रियों को दिये जा रहे थे। नांगलोई से बहादुरगढ़ की इस पदयात्रा में मैं भी शामिल था। मुण्डका के बाद श्री कपिलदेव शास्त्री भी पद-यात्रा में शामिल हो गये थे। हरियाणा से जो भी बसें आ रही थीं उनमें बैठे यात्री पद-यात्रा में चल रहे यात्रियों को उनकी अलग-अलग ही वेशभूषा में देखकर आश्चर्यचकित होते थे। टीकरी बोर्डर पर जब पद-यात्रा पहुँची तो वहाँ पुलिस का भारी इंतजाम देख यह आशंका हुई कि शायद यहाँ गिरफ्तारी होगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और सूरज ढलते-ढलते हमने बहादुरगढ़ में प्रवेश किया। रेलवे रोड पर एक महती सभा का आयोजन किया गया था जो रात देर तक चला। इस कार्यक्रम को लम्बा खींचने का कारण यह था कि भोजन का प्रबन्ध जिन लोगों के हाथ में था उनका अनुमान भी गलत निकला था अतः उनको इस आपात स्थिति से निपटने के लिए कुछ वक्त चाहिए था। भाजपा ने भी इस सभा में शराबबंदी आन्दोलन को पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। स्वामी अग्निवेश जी के ओजस्वी भाषण की सभी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा कर रहे थे। अन्य अनेक स्थानीय व प्रदेश स्तर के वक्ता यहाँ बोले और हरियाणा सरकार की आबकारी नीति की भर्त्सना की। बहादुरगढ़ में सारी व्यवस्था श्री जगदीश कौशिक, श्री जयप्रकाश आर्य, श्री जसवन्त सिंह, श्रीमति कान्ता कौशिक आदि ने सम्भाली।

चौ0 भजनलाल को इस पद-यात्रा की खबरें जैसे-जैसे मिलने लगीं उनकी रातों की नींद उड़ती गई। बहादुरगढ़ तक इस पद-यात्रा में हरियाणा के लोग कम थे क्योंकि यह हरियाणा का प्रवेश द्वार था। लेकिन आगे हिसार तक के यात्रा-पथ पर जो तैयारियां चल रही थीं उनकी भनक मिलने पर उन्होंने अनुमान लगा लिया था कि हिसार डिस्टिलरी पर कम से कम चालीस-पचास हजार सत्याग्रही अवश्य धरने पर बैठेंगे। इस विकट स्थिति से निपटने के परिणाम कुछ भी निकल सकते थे अतः उन्होंने आवश्यक समझा कि इस यात्रा को बीच में ही तितर-बितर करना अधिक उपयुक्त रहेगा। 25 सितम्बर को यात्रा बहादुरगढ़ से रवाना होकर दोपहर जाखोदा गाँव पहुँची जहाँ भोजन एवं जनसभा की विशालस्तर पर तैयारी की गई थी। गाँव के सैंकड़ों युवक बड़े उत्साह के साथ यात्रियों की आवभगत में लगे हुये थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि ये लोग अपने सिर पर कफन बान्धकर निकलें हैं तथा पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यात्रा में जा रहे हैं। जाखोदा से यात्रा रोहद होती हुई सायंकाल सांपला पहुँची यहाँ रात्रि पड़ाव था। श्री भगवान सिंह राठी व पं. रामचन्द्र आर्य आदि व्यवस्था में जुटे हुये थे। यात्रियों की संख्या इतनी अधिक होती जा रही थी कि ठहरने की व भोजन की सभी व्यवस्था लड़खड़ाने लगी थी। सांपला में यात्रियों को सांपला के बाहर तालाब के किनारे एक मन्दिर के साथ बनी बगीची में ठहराया गया तथा भोजन मन्दिर परिसर में स्वयं यात्रा में चल रही महाराष्ट्र की बहनों ने अपनी रुचि के अनुसार बनाया तथा सभी को खिलाया। 26 सितम्बर को यात्रा सांपला से चलकर इस्माइला, खरावड़ होते हुये सायंकाल खेड़ीसाध पहुँची जहाँ विद्यालय के प्रांगण में ठहरने व खाने की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। इस्माइला, खरावड़ तथा खेड़ी साध में यात्रा का हजारों ग्रामवासियों ने जोरदार स्वागत किया। चाय, शर्बत, दूध की जगह-जगह व्यवस्था की हुई थी। हजारों स्त्री-पुरुष व बच्चे कुछ दूरी तक यात्रा के काफिले के साथ भी चले तथा अपना समर्थन व्यक्त कर यात्रियों व आयोजकों का मनोबल बढ़ाया। इस बीच विशेष बात यह रही कि मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल अपने कारों के काफिले तथा अफसरों के लावलश्कर के साथ रोहतक से दिल्ली के लिए सम्भवतः इसीलिए इस सड़क से जा रहा था ताकि पद यात्रा में सम्मिलित लोगों की वास्तविक संख्या एवं जोश को स्वयं अपनी आंखों से देख सके तथा इसके परिणाम का मूल्यांकन कर सके। जब मुख्यमन्त्री की कानवाई खरावड़ गाँव के पास से गुजरी तो उसे पदयात्रियों के काफिले मिलने शुरू हुये। पदयात्रा का अगला सिरा खरावड में था तथा पिछला सिराअभी सांपला से निकल भी नहीं पाया था। लगभग पांच किलोमीटर लम्बा पदयात्रियों का जुलूस और उसमें भी अधिकतर महिलाओं को देखकर चौधरी भजनलाल के होश-हवाश उड़ गये। तथा दिल्ली पहुँचने से पहले ही हरियाणा के पुलिस महानिदेशक को चण्ड़ीगढ़ आदेश दिये कि किसी भी कीमत पर यह पदयात्रा रोहतक से आगे नहीं जानी चाहिए अतः हर-हालत में इसे रोकने के उपाय किये जायें। मुख्यमन्त्री के आदेश के साथ ही पुलिस प्रशासन सक्रिय हो गया। जैसे ही यात्रा खेड़ीसाध के स्कूल में पहुँची और स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में अभी

जनसभा शुरू ही हुई थी कि रोहतक के उपायुक्त एवं पुलिस अधिक्षक अपने अन्य अफसरों सहित दलबल के साथ पड़ाव स्थल पर आ धमके तथा उनके साथ आये खुफिया वेश में गुप्तचर यात्रियों को बीच जाकर उन्हें बरगलाने लगे ताकि वे स्वयं यात्रा से वापिस अपने घरों को चले जायें। यात्रियों को बहकाया गया कि आगे बहुत खतरा है, पुलिस तुम्हें पकड़ लेगी तथा महीनों जेल में रहना पड़ेगा, गोलियाँ चल जायेंगी, अतः तुम चुपचाप वापिस लौट जाओ। यदि मार्ग व्यय की दिक्कत हो तो हम तुम्हें सब उपलब्ध करादेंगे। जब इस सब षड्यन्त्र का आयोजकों को मालूम पड़ा तो यात्रा के संयोजक श्री जगवीर सिंह अपने युवा साथियों के साथ जिला उपायुक्त से जा भिड़े तथा उन्हें चेतावनी दे डाली कि या तो वे बाहर चले जाये वरना हम उन्हें स्वयं धक्के देकर बाहर धकेल देंगे। श्री जगवीर सिंह ने उपायुक्त एवं पुलिस अधिक्षक से कहा कि तुम लोग हरियाणा के माथे पर लगे शराब के कलंक तथा गरीब किसान मजदूरों की हो रही लूट को जारी रखने में मुख्यमन्त्री के गलत आदेशों को मानकर हरियाणा की जनता के साथ अत्याचार कर रहे हो। समय रहते तुम्हें जनता की भावनाओं का आभास हो जाना चाहिए तथा सरकार की जी हजूरी के लिए जन-आन्दोलनों को रोकने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। सभी अधिकारी इन बातों को सुनकर तिलमिला रहे थे पर कुछ कर पाने में असमर्थ थे क्योंकि पदयात्रियों की भीड़ एवं जोश जबरदस्त था। रातभर खेड़ीसाध में कार्यक्रम चलता रहा। अगले दिन जैसे ही पदयात्रा रोहतक के लिए रवाना हुई तथा मुश्किल से दो किलोमीटर ही चल पाई होगी कि अस्थलबोहर स्थित तिलियारलेक पर भारी पुलिस बन्दोबस्त के साथ यात्रा को रोक लिया गया। पुलिस के सैंकड़ों बड़े अधिकारी एवं स्वयं हरियाणा के पुलिस महानिदेशक इस कार्यवाही को सरअंजाम देने के लिए मौके पर उपस्थित थे। यात्रा के नेता स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी ने आगे बढ़कर पुलिस अधिकारियों से कहा कि वे अपनी पुलिस हटा लें तथा यात्रा को आगे बढ़ने दें। यात्रा पूर्णतया शान्तिपूर्ण एवं प्रजातान्त्रिक तरीके से चल रही है अतः इसे रोकने का कोई औचित्य नहीं है। स्वामी जी ने कहा कि वे केवल शराबखोरी के विरुद्ध जनभावनाएं व्यक्त करने के लिए यात्रा का आयोजन कर रहे हैं जोकि प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। किन्तु पुलिस ने एक न सुनी तथा गिरफ्तारी शुरू कर दी। हरियाणा रोड़वेज की लगभग डेढसौ बसें यात्रियों को गिरफ्तार कर अन्यत्र ले जाने के लिए वहाँ खड़ी की हुई थी। सर्वप्रथम स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में लगभग पच्चीस शीर्ष नेताओं को हिरासत में लिया गया तथा उन्हें पहले साल्हावास थाने में तथा बाद में गुड़गाँव जेल में भेज दिया गया। इनमें मुख्य रूप से श्री स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी आत्मानन्द, चौधरी धर्मवीर आर्य बरवाला तथा जोधपुर के आर्यवीर आदि शामिल थे। अन्य सैंकड़ो कार्यकर्ताओं को रोहतक की पुलिस लाइन, सदरथाना व अन्यस्थानों पर रोक दिया गया तथा शेष हजारों यात्रियों को हरियाणा एवं दिल्ली बोर्डर पर जाकर छोड़ दिया। मेधा पाटेकर ने रोहतक पहुँच कर जिला उच्चाधिकारियों से मिलकर उन्हें काफी खरी-खोटी सुनाई। रोहतक के छोटूराम पार्क में दोपहर के भोजन की व्यवस्था की जा रही थी, पुलिस ने वहाँ जाकर सब्जी के पतीले, चावल के टोकरे, दाल-कढ़ी के भगोने, तेल के कढाहे सारा सामान मिट्टी में मिला दिया, हलवाइयों को भगा दिया। हुड्डा काम्पलैक्स में सभा होनी थी, पुलिस ने वहाँ पहुँचकर भी सारे टैंट-शामियाने गिरा दिये, मंच तोड़ दिया, माईक फोड़ दिये और कार्यकर्त्ताओं को डरा धमका कर भगा दिया। इस पदयात्रा के भय से हरियाणा सरकार ने जो पुलिस कार्यवाही की थी उसका नाम रखा गया था आपरेशन जगाधरी नम्बर दो। हरियाणा के प्रत्येक थाने को आदेश था कि वह अपने क्षेत्र से किसी भी संदिग्ध व्यक्ति को किसी भी हालत में हिसार न आने दे। इस ऐतिहासिक यात्रा ने ही हरियाणा सरकार के कफन में कील का काम किया था। क्योंकि इसके बाद पूरे हरियाणा में जबरदस्त शराबबन्दी लहर चल पड़ी थी। जो पूर्ण शराबबन्दी लागू होने पर ही थम पाई थी। अहिंसक और लोकतंत्रीय ढंग से किये जा रहे इस प्रदर्शन को अपनी नृशंस तानाशाही से नेस्तनाबूद करके भजन लाल ने अपने ही भविष्य में खूँटा ठोंक लिया था। (विधान सभा के अगले चुनाव में उन्हें मूँह की खानी पड़ी। चौ. बंसीलाल मुख्यमंत्री बनकर आये तो पहला काम उन्होंने हरियाणा में पूर्ण शराबबंदी लागू करने का ही किया)।

यात्रा-भंग होने का समाचार जैसे ही अगले यात्रा-पथ के विभिन्न पड़ावों पर पहुँचा तो बीच-बीच में ही जत्थे निकल कर आगे बढ़ने लगे। स्वामी जगत्मुनि जैसे वयोवृद्ध संन्यासी भी इस पथ पर बढ़ते दिखाई दिये। भजन लाल को आशंका थी

कि आर्यसमाजी कुछ भी कर सकते हैं अतः उसने हिसार को पुलिस छावनी बना दिया। वहाँ इतना पुलिस बल था कि परिंदा भी पर नहीं मार सकता था। इसके बावजूद हिसार नगर में शराबबंदी यात्रा निकाली गई भले ही वह सांकेतिक क्यों न रही हो। 1 अक्टूबर की रात्रि में ही डिस्टिलरी के निकट खेतों में कुछ साहसी आर्य युवकों ने पहुँच कर पोजीशन ले ली थी। 2 अक्टूबर को मौका पाकर ये युवक डिस्टिलरी के गेट पर पहुँच गये और जेब से ओ३म् पताकाएँ निकाल कर हवा में लहराने लगे। भजनलाल मुर्दाबाद के खूब नारे लगे। शराबबंदी के निर्धारित नारों से भी आकाश गूँज उठा। पुलिस ने इन सभी को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन लाख कोशिश करने पर भी भजन लाल अपना यह संकल्प पूरा नहीं कर पाया कि एक भी यात्री को डिस्टिलरी तक न पहुँचने दूँगा। जब ये खबरें अखबारों में छपीं तो उसे लज्जित होना पड़ा।

मार्च 1994 में भी ठेकों की नीलामी छूटने पर हरियाणा शराबबंदी संघर्ष समिति ने 23 मार्च को विरोध दिवस मनाया। 15 फरवरी 1994 से हथीन के शराब कारखाने को बन्द करने के लिए धरना व भूख हड़ताल का कार्यक्रम चल रहा था। 14 फरवरी 1994 को स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश ने जीन्द जिले के ईगराह, बुवाना, करेला, हथवाला, ढ़िगाना, थूवा, छात्तर, रायचन्द वाला, रोहेड़ा, मूंड आदि गाँवों में शराबबंदी सम्मेलनों को सम्बोधित किया।